नवभारत टाइम्स, लखनऊ

दिनांक: 03.03.2021

उपलब्धि | 10 मार्च को रवाना होंगे मेक इन इंडिया के इंजन

मोजाम्बिक की ट्रेनें चलाएंगे बीएलडब्ल्यू के इंजन

■ टीएन मिश्र, लखनऊ

पहली वार मेक इन इंडिया ब्रैंड के डीजल इंजन अव मोजाम्विक की पटरियों पर दौड़ेंगे। यह पहला मौका है जव भारत में डिजाइन किए हुए और पूरी तरह भारत में वने और देश से ही वित्तपोषित इंजन विदेश की ट्रेनें चलाएंगे। मोजाम्विक ने भारत के साथ छह अत्याधुनिक इंजनों की खेप के लिए करार किया है। यह इंजन यूपी की वनारस लोकोमोटिव वर्कशॉप (वीएलडब्ल्यू) में तैयार किए गए हैं। इन इंजनों की पहली खेप 10 मार्च को रवाना की जाएगी।

वाराणसी की वीएलडब्ल्यू वर्कशॉप ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मील का पत्थर स्थापित किया है। कारखाना प्रवंधन केप गेज के छह इंजन वनाने का काम काफी तेजी से कर रहा है। जीएम अंजली गोयल ने दो इंजन पूरी तरह तैयार करा लिए हैं। यह इंजन 10 मार्च को मोजाम्विक के लिए रवाना किए जाएंगे। वीएलडब्ल्यू से निर्यात किए जाने वाले यह इंजन अत्याधुनिक तकनीक से युक्त हैं। पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर ने भी इसमें अहम भूमिका अदा की है, जिससे कई पार्ट्स हासिल करने में आसानी हुई है।

3000 हार्सपॉवर के हैं केपगेज इंजन

3000 हार्सपॉवर के यह इंजन साढे तीन फुट चौड़ी पटरियों पर दौड़ेंगे। 2255 टन क्षमता के यह इंजन 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकेंगे। उन्होंने बताया कि ऑर्डर मिलने के 14 महीने के अंदर डिजाइन तैयार करने से लेकर प्रोटोटाइप इंजन बनाने का चुनौतीपूर्ण काम किया गया है, जिसमें से क्रैंक केस असेम्बली बीएलडब्ल्यू ने खुद तैयार की है। यह एसी-एसी ट्रैक्शन सिस्टम वाले इंजन हैं। इनकी खासियत यह है कि ट्रैक्शन अल्टरनेटर, ट्रैक्शन मोटर, टर्बो और वाटर क्लोसेट मोजाम्बिक के हिसाब से तैयार किए गए हैं।

NBT नजरिया

मेक इन इंडिया ब्रैंड को वैश्विक रूप से स्थापित करने के लिए इस तरह की पहल का स्वागत करने के साथ ऐसे प्रॉजेक्टों का विस्तार किया जाना चाहिए। विश्व की बड़ी रेल सेवाओं में से एक भारतीय रेलवे को इस तरह के मौकों को निवेश के अच्छे अवसर में तब्दील करना चाहिए। इस पूरे प्रॉजेक्ट में बीएलडब्ल्यू ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन किया है। इस सिलसिले को रुकना नहीं चाहिए। उच्चाधिकारियों को इसके लिए कर्मचारियों को उत्साहित करना चाहिए।

दैनिक जागरण, वाराणसी

दिनांक: 03.03.2021

बरेका में पहली बार रिवीजन कूल्हा प्रत्यारोपण सर्जरी

जागरण संवाददाता, वाराणसी : बरेका केंद्रीय हॉस्पिटल में हाल ही में पहली बार कूल्हे की रिवीजन प्रत्यारोपण सर्जरी हुई। इससे पहले ऐसी सर्जरी के लिए रेलवे मरीजों को दिल्ली, कोलकाता या मुंबई भेजता था, मगर इस बार मुख्य चिकित्साधिकारी डा. सुजीत मल्लिक के आग्रह पर इस जटिल सर्जरी को यहीं किया गया।दरअसल, बरेका की 72 वर्षीय सुमित्रा देवी का 2003 में कूल्हा बदला गया था। 17 वर्ष बाद दर्द देने लगा था। इस पर उन्हें आधुनिकतम कृत्रिम कूल्हा लगाया गया, जो जीवनपर्यंत चलेगा। ओमेगा प्लस हास्पिटल के मुख्य आर्थोपेडिक सर्जन डा. कर्मराज सिंह के नेतृत्व में मेडिकल टीम ने आपरेशन किया।